बहारे
तहरीर
(हिस्सा 4)
عبد مصطفیٰ
AM ABDE MUSTAFA

ABOUT US

Abde Mustafa Official, a team from Ahle Sunnat Wa Jama'at
Our motto : Serving Quraano Sunnat, preaching Ilme Deen and to reform people.

This team came into existence in the year 2012 and in very few years this team did a lot of acts.
There is also a special place of Abde Mustafa Official on social media networking sites.

Lots of people from all over the world are connected to us via Facebook, WhatsApp, Instagram, Telegram, YouTube and Blogger.

Abde Mustafa Official

abdemustafaofficial.blogspot.com

गधे की ताज़ीम

एक मर्तबा हुज़ूर -ए- अकरम ﷺ दराज़गोश पर सवार हो कर हज़रत सा'द बिन उबादा रदिअल्लाहु त'आला अन्हु की इयादत के लिए तशरीफ़ ले गए।

(بخاری،باب عیادۃ المریض راکبا و....،ر5663،ملتقطاً)

इस हदीस की शरह करते हुए अल्लामा गुलाम रसूल सईदी अलैहिर्रहमा लिखते है कि इस हदीस में मज़कूर है के नबी -ए- करीम ﷺ गधे पर सवार हो कर हज़रत सा'द बिन उबादा की इयादत के लिए तशरीफ़ ले गए इस लिए गधे पर सवार होने को हक़ीर नही समझना चाहिए।

मुल्ला अली क़ारी हनफ़ी अलैहिर्रहमा ने (तो यहाँ तक) लिखा है के जो शख्स गधे पर सवारी को कमतर और हक़ीर जानता है वो खुद गधे से भी ज़्यादा कमतर और हक़ीर है और इस हदीस से ये भी मालूम हुआ के गधे पर सवार होना सुन्नत है।

गांव और देहात में गधे पर सवारी के मवाक़े है।

(انظر: نعم الباری فی شرح صحیح البخاری،ج11،ص923)

सुब्हान अल्लाह! जिस चीज़ को हुज़ूर ﷺ से निस्बत हो जाए वो भी मुअज़्ज़म हो जाती है।

हुज़ूर ﷺ से मुहब्बत करने वाले उन तमाम चीज़ों से मुहब्बत करते है जिस की निस्बत हुज़ूर ﷺ से हो।

ये कैसा अक़ीदा है के हुज़ूर ﷺ के इल्म को जानवरों और पागलो से तशबीह दी जाए और फिर ईमान का और इश्क़ -ए- रसूल ﷺ का दावा किया जाए?

इश्क़ तो ये कहता है के जिस गधे पर नबीयों के इमाम ने सवारी फरमाई है अब उस सवारी को हक़ीर समझने वाला खुद गधे से ज़्यादा कमतर है।

अब्दे मुस्तफ़ा

कहने से पहले करो भी

एक बुज़ुर्ग के पास एक औरत अपने बच्चे को ले कर आयी और कहने लगी : इस बच्चे को गुड़ खाने से मना फरमा दें।

बुज़ुर्ग ने कहा कि वो उस बच्चे को दूसरे दिन लेकर आये।
जब वो औरत दूसरे दिन बच्चे को लेकर आयी तो बुज़ुर्ग ने बच्चे से फरमाया : बेटा, गुड़ मत खाया करो.........,
बच्चे की माँ बोली : हज़रत ये नसीहत तो आप कल भी कर सकते थे (फिर दूसरे दिन क्यों बुलाया?)
बुज़ुर्ग फरमाने लगे : कल ऐसा करना नामुमकिन था क्योंकि कल मैने खुद गुड़ खाया हुआ था!

(انظر: آدابِ استاد و شاگرد، ص33)

दूसरों को नसीहत के फूल बांटने से पहले हमें खुद को देखना चाहिये कि हमने कितनी बातों पर अमल किया है अगर हम अमल के बाद दूसरों को नेकियों की दावत देंगे तो हमारी दावत क़बूल होती हुई नज़र आयेगी।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

हुज़ूर ﷺ की 8 अदाएं

नबीये करीम ﷺ की हर अदा प्यारी है जिन में से ये 8 भी है :-
(1) जब भी कोई आप ﷺ को पुकारता तो आप ﷺ "लब्बैक" कह कर जवाब देते।

(الشفاء، 1/121)

(2) अगर कोई शख़्स आप ﷺ के कान में सरगोशी करता तो जब तक उसकी बात मुक़म्मल न हो जाती आप ﷺ अपना सर मुबारक उससे दूर न फरमाते।

(ایضاً)

(3) आप ﷺ मजलिस में कभी पाँव फैला कर न बैठते।

(ایضاً)

(4) जब कोई मुलाकात के लिए आता तो बाज़ अवक़ात उसके लिए आप ﷺ अपनी चादर बिछा देते बल्कि अपनी मसनद भी पेश कर दिया करते।

(ایضاً، 1/122)

(5) आप ﷺ सहाबा -ए- किराम को उन की कुन्नियत और पसन्दीदा नामो से पुकारते।

(ایضاً)

(6) आप ﷺ बड़ी वक़ार के साथ इस तरह ठहर ठहर कर गुफ़्तगू फरमाते के अगर कोई आप ﷺ जुमलो को गिनना चाहता तो गिन सकता था।

(ایضاً،1/139)

(7) आप ﷺ रफ्तार के साथ झुक कर यूँ चला करते थे गोया बुलंदी से उतर रहे है, हज़रत अबु हुरैरा कहते है के हम रसूलुल्लाह ﷺ के साथ चलने में हाँफने लगते थे।

(شمائل ترمذی، ص86)

(8) आप ﷺ खुशबू का तोहफा वापस नही फरमाते बल्कि फरमाते के खुशबू का तोहफा रद मत करो क्योंकि ये जन्नत से निकली है।

(ایضاً، ص130)

अब्दे मुस्तफ़ा

एक तरफ इल्मे दीन और एक तरफ बेटे का जनाज़ा

इमाम अबु यूसुफ रहिमहुल्लाहु त'आला के बेटे का जब इंतेक़ाल हो गया तो आप ने एक शख्स को इसे दफन करने की ज़िम्मेदारी सौंप दी और खुद इमाम अबु हनीफा रहिमहुल्लाहु त'आला की मजलिस में इल्मे दीन सिखने चले गए और कहने लगे के कहीं मेरा आज का सबक़ छूट ना जाये!

(المستطرف فی کل فن مستظرف، جلد1، صفحہ نمبر76)

ज़ुबान से इज़हार करने वाले तो काफ़ी मिलेंगे लेकिन अस्ल में इसे कहेते है इल्मे दीन हासिल करने का जज़्बा!
ऐ काश के हमारे नौजवानों के अंदर भी ऐसा जज़्बा पैदा हो जाये.....,

अब्दे मुस्तफ़ा

बस तुम्हारी लगन

हज़रते सुल्तानुल आरिफीन, सुल्तान बाहू रहीमहुल्लाह त'आला ज़मीन (खेत) में हल चला रहे थे कि हिन्दुओं की एक बारात का वहां से गुज़र हुआ जो अपना रास्ता भूल चुकी थी।

उस बारात को क़रीब के एक गांव अहमदपुर जाना था, उन्होने आप अलैहिर्रहमा से पूछा कि हमें अहमदपुर जाना है, रास्ता किधर से है?

आपने फरमाया : बता दूँ या पहुंचा दूँ?

ये जवाब सुनकर वो लोग हैरान हुये फिर कहने लगे कि बाबा जी! पहुंचा दो आपने फरमाया कि आँखे बंद करो........ अब खोलो, आँखें खुली तो रोज़ा -ए- रसूल ﷺ सामने था और बारात मदीना -ए- मुनव्वरा में खड़ी थी!

उन्होने कहा कि बाबा जी! ये (तो वो) अहमदपुर नहीं है जहाँ हम ने जाना है तो आपने फरमाया कि मैं तो इसी अहमदपुर को जानता हूँ!

(ملخصاً:شرح حدائق بخشش، ص159)

हुज़ूर ﷺ से सच्ची मुहब्बत करने वाले हमेशा आप ﷺ की यादों में खोए रहतें हैं, उनकी नज़रों में बास मदीने की तसवीर होती है, उन्हें हर वो महफिल पसन्द आती है जिसमें हुज़ूर ﷺ की बातें हों, हर वो ज़िक्र सुहाना लगता है जिसमें हुज़ूर ﷺ का ज़िक्र शामिल हो, बस उन्हीं की लगन......

इन्हें जाना, इन्हें माना, ना रखा ग़ैर से काम
लिल्लाहिल हम्द मैं दुनिया से मुसलमान गया।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

हमारे नौजवान और सोशल मीडिया

इस ज़माने में अब बहुत कम लोग ऐसे बचे हैं जो सोशल मीडिया से दूर हैं।

टीवी, मोबाइल फोन और इन्टरनेट के ज़रिये हर शख्स पूरी दुनिया से ऐसा जुड़ा हुआ है जैसे दो उंगलियाँ।

दुनिया के एक कोने में कुछ होता है तो हज़ारों मील दूर दूसरे कोने में फौरन खबर पहुँच जाती है।

सोशल नेटवर्किंग वेबसाईट्स के ज़रिये मुख्तलिफ शहरों के रहने वाले एक दूसरे को दोस्त बना रहे हैं, इन वेबसाइट्स में फेसबुक, वॉट्सएप्प, ट्विटर, इंस्टाग्राम, टेलीग्राम और वीडियो कॉलिंग एप्प्स बहुत मशहूर हैं।
नौजवानों की अक्सरियत सोशल मीडिया पर मौजूद है, शहर क्या और देहात क्या हर जगह सोशल मीडिया का जाल बिछा हुआ है।

फायदा भी नुक्सान भी :-

जहाँ एक तरफ लोगों को सोशल मीडिया से बहुत बड़ा फायदा हुआ है वहीं दूसरी तरफ बहुत बड़ा नुक़्सान भी हुआ है फायदे और नुक़्सान का दारोमदार इसके इस्तिमाल पर है, अगर आप इसका सहीह इस्तिमाल करते हैं तो ये मुफीद है वर्ना मुदर।

नौजवानों के हालात :-

कई नौजवानों की टाईम लाईन, स्टेटस और तस्वीर ऐसी होती हैं कि अगर उनके वलिदैन या घर वाले देख लें तो शर्म से पानी पानी हो जायें!
टाईम लाईन पर बेहूदा लतीफे, गंदी गंदी तस्वीरें और गैर अख्लाक़ी तहरीरें मौजूद होती हैं।
अगर कभी कभार दीनी जज़्बा पैदा हो भी गया तो ये तहरीरें शेयर करते हैं कि "ये मेसेज 11 लोगों को भेजो तो खुशखबरी मिलेगी", "इस महीने की मुबारकबाद दो तो जन्नत में जाने से कोई नहीं रोक सकता", "आज सैय्यदा फातिमा का यौम -ए- विलादत है" (जो कि सोशल मीडिया पर रोज़ होता है) वगैरा।
अगर दीन के लिये जज़्बात ज़्यादा बढ़ गये तो फिर ये मेसेज शेयर करते हैं "एक फिल्म रिलीस हो रही है अल्लाह के बन्दे......." बाकी तो आप जानते ही हैं।

सहीह इस्तिमाल :-

अगर आप फेसबुक, वॉट्सएप्प, ट्विटर, और इंस्टाग्राम वगैरा के इस्तिमाल करते हैं तो उन्हीं लोगों को फोलोव करें या फ्रेंड (दोस्त) बनायें जिनकी तहरीरें (पोस्टस्), ट्वीट्स, फोटोज़, और वीडियोज़ वगैरा से आपके इल्म में इज़ाफ़ा हो या कोई अच्छी चीज़ सीखने को मिले, मिसाल के तौर पर उलमा -ए- अहले सुन्नत को फॉलो करें,

इस्लामिक पेजेस को लाइक करें, अपने दोस्त और रिश्तेदारों जो इन वेबसाइटस पर मौजूद हों, उन्हें लिस्ट में शामिल करें।

जहां कहीं कोई गैर मुनासिब चीज़ देखें तो फौरन उसके भेजने वाले को ब्लॉक करें।

गलत इस्तिमाल :-

सोशल मीडिया का गलत इस्तिमाल आपके गुनाहों में इज़ाफ़ा कर सकता है और ये भी हो सकता है कि आपको जेल की हवा खानी पड़े लिहाज़ा सियासी मामलात में बहस करने, किसी को गालियों भरा मेसेज करने और गैर अख्लाक़ी तहरीरों या तस्वीरों पर तब्सिरा करने से इज्तिनाब करें।

अ़ब्दे मुस्तफा

जन्नत में आधी आबादी हमारी होगी

हज़रते अब्दुल्लाह बिन मसऊद रदिअल्लाहु त'आला अन्हु बयान करते है के रसूलुल्लाह ﷺ ने हम से फरमाया के क्या तुम इस बात से राज़ी नही हो के जन्नत में तुम्हारी तादाद तमाम जन्नतियो की चौथाई हो?

हज़रत इब्ने मसऊद फरमाते है के हम ने खुशी से नारा -ए- तकबीर बुलंद किया फिर हुज़ूर ﷺ ने फरमाया के क्या तुम इस बात से राज़ी नही हो के जन्नत में तुम्हारी तादाद तमाम जन्नतियो की तिहाई हो?

हज़रत इब्ने मसऊद फरमाते है के हम ने खुशी से नारा -ए- तकबीर बुलंद किया फिर हुज़ूर ﷺ ने फरमाया :

मुझे उम्मीद है के जन्नत में तुम्हारी तादाद तमाम जन्नतियो से आधी (50%) होंगी।

(ملتقطاً: صحیح مسلم، باب بیان کون ھذہ الامۃ....الخ، ر437)

हज़रत अबु सईद खुदरी रदिअल्लाहु त'आला अन्हु की रिवायत में है के आप ﷺ ने इरशाद फरमाया के उस ज़ात की कसम जिस के क़ब्ज़े क़ुदरत में मेरी जान है मेरी ख्वाहिश है की तुम तमाम जन्नतियो के निस्फ (आधे) हो।

(ایضاً، ر440،ملتقطاً)

इस उम्मत पर ये महरबानी सिर्फ और सिर्फ हुज़ूर ﷺ की वजह से है।

इस हदीस से उन फिरको का रद्द भी हो जाता है जिन की तादाद एक शहर भरने के बराबर भी नही, वो भला आधी जन्नत कैसे भरेंगे?
अलहम्दुलिल्लाह हुज़ूर ﷺ ने ये बिशारत सवादे आज़म,अहले सुन्नत व जमाअत को अता फरमाई है।

अब्दे मुस्तफ़ा

अज़ान -ए- बिलाल और सूरज का निकलना

आवामुन नास से लेकर खवास तक एक वाक़िया बहुत मशहूर है कि हज़रते सय्यिदुना बिलाल रदिअल्लाहु त'आला अन्हु की ज़ुबान में लुक्नत थी जिसकी वजह से आप रदिअल्लाहु त'आला अन्हु अज़ान के कालिमात को सहीह तौर पर अदा नहीं कर पाते थे, एक मर्तबा आपको अज़ान देने से रोका गया और जब आपने अज़ान नहीं दी तो सूरज ही नहीं निकला!
ये भी कहा जाता है कि हज़रते बिलाल रदिअल्लाहु त'आला अन्हु की "सीन" अल्लाह त'आला के नज़दीक "शीन" है।
इस वाक़िये को कूछ मुक़र्रिरीन बड़े शौक से बयान करते हैं और कुछ लोगों को भी ऐसी मसालेदार रिवायत सुनने में बड़ा मज़ा आता है।
कई मुअ़तबर उलमा ने इस रिवायत का रद्द किया है और इसे मौज़ू व मनघढ़त क़रार दिया है लेकिन फिर भी कुछ मुक़र्रिरीन अपनी आदत से मजबूर हैं, मुक़र्रिरीन की पेशावराना मजबूरी उन्हें ऐसी रिवायत छोड़ने नहीं देती।
ज़रा सा झूठ ज़रूरी है दास्तान के लिये
इस रिवायत के मुतअ़ल्लिक़ उलमा -ए- मुहक़्क़िक़ीन की आरा ज़ेल में नक़्ल की जाती हैं :-
(1) इमाम इब्ने कसीर (मुतवफ्फ़ा 774 हिजरी) इस रिवायत के बारे में लिखते हैं कि इसकी कोई असल नहीं है।

(البداية والنهاية، ج5، ص477)

(2) इमाम शैख अब्दुर रहमान सखवी (मुतवफ्फ़ा 904 हिजरी) इस रिवायत को नक़्ल करने के बाद बुरहान सफाक़ूसी के हवाले से अल्लामा जमालुद्दीन अल मिज़्ज़ी के क़ौल को नक़ल करते हैं कि ये रिवायत अवाम की जुबान पर तो मशहूर हैं लेकिन हमने किसी भी किताब में इसे नहीं पाया।

(المقاصد الحسنۃ، ص190، ر221)

(3) इमाम सखवी एक और मक़ाम पर लिखते हैं कि इब्ने कसीर ने कहा है की इसकी कोई असल नहीं है और इसी तरह अल्लामा जमालुद्दीन अल मिज़्ज़ी का क़ौल गुज़र चुका।

(ایضاً، ص397، ر582، ملتقطاً)

(4) अल्लामा अब्दुल वह्हाब शारानी (मुतवफ्फ़ा 973 हिजरी) इस रिवायत के बारे में फरमाते हैं कि ये आवाम की जुबान पर तो मशहूर है लेकिन उसूल में हमने इस बारे में कोई तायीद नहीं देखी।

(البدر المنیر فی غریب احادیث البشیر والنذیر، ص117، ر915 بہ حوالہ جمال بلال)

(5) अल्लामा शारानी मज़ीद लिखते हैं कि इब्ने कसीर कहते हैं कि इसकी कोई असल नहीं।

(ایضاً، ص186، ر1378)

(6) इमाम मुल्ला अली क़ारी हनफ़ी (मुतवफ्फ़ा 1014 हिजरी) ने भी इस रिवायत को मौज़ू क़रार दिया है।

(الاسرار المرفوعۃ فی الاخبار الموضوعۃ المعروف بالموضوعات الکبری، ص140، ر76)

(7) अल्लामा बदरुद्दीन ज़रकशी (मुतवफ्फ़ा 794 हिजरी) इस रिवायत को नक़्ल करने के बाद लिखते हैं कि हाफिज़ जमालुद्दीन अल मिज़्ज़ी फरमाते हैं कि ये रिवायत आवाम की जुबान पर तो मशहूर है, लेकिन इस बारे में हमने उम्महातुल कुतुब में कुछ भी नहीं देखा और इस रिवायत के बारे में शैख बुरहानुद्दीन सफाक़ूसी का भी यही क़ौल है।

(اللآلی المنثورۃ فی الاحادیث المشہورۃ، ص207، 208)

(8) अल्लामा इब्नुल मुबरद मुक़द्दसी (मुतवफ़्फ़ा 909 हिजरी) इस रिवायत को लिखने के बाद अल्लामा जमालुद्दीन अल मिज़्ज़ी के क़ौल नक़्ल करते हैं कि मुस्तनद कुतुब में इसका कोई वुजूद नहीं है।

(التخریج الصغیر والتحبیر الکبیر، ص109، ر554)

(9) अल्लामा इस्लाईल बिन मुहम्मद अल अजलूनी (मुतवफ़्फ़ा 1162 हिजरी) इस रिवायत को लिखने के बाद इमाम जलालुद्दीन सुयूती का क़ौल नक़्ल करते हैं कि उम्महातुल कुतुब में ऐसा कुछ भी वारिद नहीं हुआ और इमाम मुल्ला अली क़ारी फरमाते हैं कि इसकी कोई अस्ल नहीं और अल्लामा जमालुदीन अल मिज़्ज़ी से नक़्ल करते हूये शैख बुरहानुद्दीन सफाक़ूसी फरमाते हैं कि ये आवाम की ज़ुबान पर तो मशहूर है लेकिन अस्ल कुतुब में ऐसा कुछ भी वारिद नहीं हुआ।

(کشف الخفاء ومزیل الالباس، ص260، ر695)

(10) अल्लामा अजलूनी मज़ीद लिखते हैं कि इब्ने कसीर कहते हैं कि इसकी कोई अस्ल नहीं हैं।

(ایضاً، ص530، ر1520)

(11 से 15) इस रिवायत का रद्द इन कुतुब में भी मौजूद है :-

-"تمیز الطیب من الخبیث"،"تذکرۃ الموضوعات للھندی"،"الدرر المنتثرۃ للسیوطی"،"الفوائد للکرمی"،"اسنی المطالب"

(16) अल्लामा शरीफुल हक़ अमजदी (मुतवफ़्फ़ा 1421 हिजरी) लिखते हैं कि ये वाक़िया बाज़ किताबों में दर्ज है लेकिन तमाम मुहद्दिसीन का इस पर इत्तिफाक़ है कि ये रिवायत मौज़ू, मनघढ़त और बिल्कुलिया झूठ है।

(فتاوی شارح بخاری، ج2، ص38)

(17) अल्लामा अब्दुल मन्नान आज़मी (मुतवफ़्फ़ा 1434 हिजरी) लिखते हैं कि हज़रते बिलाल रदिअल्लाहु त'आला अन्हु को अज़ान से माज़ूल करने का ज़िक्र हमको नहीं मिला बल्कि अयनी, जिल्द पन्जुम, सफहा नम्बर 108 में है कि हज़रते बिलाल रदीअल्लाहु त'आला अन्हु रसूलुल्लाह ﷺ के लिये सफर और हज़र हर दो हाल में

अज़ान देते और ये रसूलुल्लाह ﷺ और हज़रते सिद्दीक़ -ए- अकबर रदिअल्लाहु त'आला अन्हु दोनों की आखिरी ज़िन्दगी तक मुअज़्ज़िन रहे।

(فتاوی بحر العلوم، ج1، ص109)

(18) मौलाना गुलाम अहमद रज़ा लिखते हैं कि ये वाक़िया मौज़ू वा मनघढ़त है, हक़ीक़त से इसका कोई ताल्लुक़ नहीं है कि हज़रते बिलाल रदिअल्लाहु त'आला अन्हु से कालिमात -ए- अज़ान सहीह (तौर पर) अदा नहीं हो पाते थे।

(ملتقطاً: فتاوی مرکز تربیت افتا، ج2، ص647)

इन दलाइल के बाद अब इस रिवायत के मौज़ू वा मनगढ़ंत होने में कोई शक बाक़ी नहीं रहता।

अब्दे मुस्तफ़ा

मुहद्दिसीन का एहसान

हारून रशीद के पास एक ज़िन्दीक को लाया गया, खलीफा ने उस के कत्ल का हुक़्म सादिर किया तो उस ने कहा :

तुम मुझे क़त्ल कर दोगे लेकिन उन चार हज़ार (4000) अहादीस का क्या करोगे जिन को मैने वद'अ कर के (यानी घड़ कर) लोंगों में आम कर दिया है! उन (चार हज़ार) में से कोई बात रसूलुल्लाह ﷺ से मन्कुल नही थी।

ख़लीफ़ा ने कहा के ए ज़िन्दीक! तू अब्दुल्लाह बिन मुबारक और इब्ने इस्हाक़ को नही जानता, उन की तनक़ीद की छन्नी से तेरी तमाम हदीसो का एक एक हर्फ़ निकल आएगा।

(تاریخ دمشق، ج4، ص115 بہ حوالہ شان حبیب المنعم من روایات المسلم)

ये तो सिर्फ एक शख्स का वाकिया है जिस ने चार हज़ार अहादीस घड़ कर आम की, इस के इलावा कई लोगो का ज़िक्र तारीख में मिलता है जिन्होंने हदीसे घड़ीं बल्कि कई फिरको ने इस पर ज़ोर दिया और इस के ज़रिए अवाम को गुमराह करने की कोशिश की लेकिन इस उम्मत पर मुहद्दिसीन -ए- किराम का बहुत बड़ा एहसान है जिन्होंने अपनी तहक़ीक़ व तनक़ीद की छन्नी में हदीस -ए- रसूल ﷺ को मनघढ़त

रिवायात से अलग किया और आज भी मुहक्क़िक़ीन इस एहम तरीन काम मे मसरूफ है।
किसी भी रिवायत को बयान करने पहले ये देख लें के वो किस किताब में मौजूद है और ये भी ज़रूरी नही के किताब में होने की वजह से वो सहीह हो क्योंकि किताबो में भी झूटी रिवायात होती है लिहाज़ा ये भी देखना चाहिए के उस रिवायत पर उलमा -ए- अहले सुन्नत कि क्या तहक़ीक़ है अगर आप ने कभी ऐसी रिवायत बयान कर दी या लिख दी जो सहीह नही थी तो इल्म हो जाने पर अपनी ग़लती को फौरन तस्लीम करे बजाए हठधर्मी करने के, क्योंकि इस पर इसरार करना मज़ीद एक बड़ी ग़लती है।

अब्दे मुस्तफ़ा

मैं उसे सुन्नी बना दूँगा

इमरान बिन हित्तान रक़ाशी अकाबिर उलमा -ए- मुहद्दिसीन में से थे, उन की एक चचा ज़ाद बहन खारजीया (एक गुमराह फिरके से) थी, उस से निकाह कर लिया!
उलमा -ए- किराम ने सुनकर ताना ज़नी की तो उन्होने कहा : मैने तो इसलिये निकाह किया है कि इसको अपने मज़हब पर ले आऊँगा।
एक साल ना गुज़रा था कि खुद खारजी हो गये!!!

(الإصابة فی تمیز الصحابة،ج5،ص233 بہ حوالہ ملفوظات اعلیٰ حضرت)

शिकार करने चले थे खुद शिकार हो बैठे
इसी तरह आज भी कुछ सुन्नी लड़के बद मज़हबों के घर से लड़की लाते हैं और कहते हैं कि मै इसे सुन्नी बना दूंगा लेकिन होता कुछ और है!
निकाह करते वक़्त सबसे पहले हमें एक दूसरे के दीन को मल्हूज़ रखना चाहिये, अगर लड़की या लड़का बद-मज़हब है तो हरगिज़ उनसे रिश्ता ना जोड़ें।

अ़ब्दे मुस्तफा

दो रजिस्टर

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रदिअल्लाहु त'आला अन्हु बयान करते है कि एक दिन हुज़ूर ﷺ हमारे पास तशरीफ़ लाये, आपके हाथो में दो किताबे थी।

आप ﷺ ने दरयाफ्त फरमाया कि क्या तुम जानते हो कि ये दो किताबें किस चीज़ से मुताल्लिक़ है?

हम ने अर्ज़ किया : नही, या रसूलुल्लाह! ﷺ आप ही हमें बताए,

हुज़ूर ﷺ ने अपने दायें हाथ वाली किताब के बारे में फरमाया कि ये किताब रब्बुल आलमीन की तरफ से है जिसमें अहले जन्नत के नाम है, इन के आबा व अजदाद और क़बीलों के नाम है फिर इसके आखिर में मुहर लगा दी गयी है, इन मे कोई इज़ाफ़ा नही हो सकता और कमी भी नहीं हो सकती।

इसके बाद आप ﷺ ने अपने बायें हाथ मे मौजूद किताब के बारे में इसी तरह के अल्फ़ाज़ अहले जहन्नम के मुताल्लिक़ इरशाद फरमाये।

(ملخصًا وملتقطاً: الجامع الترمذی، باب ماجاء ان اللہ کتب کتابا لاھل الجنۃ واھل النار، ح2141)

यहाँ ये सवाल पैदा होता है कि एक किताब में तमाम जन्नतियो और दूसरी किताब में जहन्नमियों के नाम, उनके बाप दादों के नाम और उनके क़बीलों के नाम कैसे मौजूद हो सकते है हालांकि वो किताब हुज़ूर ﷺ के हाथों में थी और सहाबा -ए- किराम ने उन्हें देखा भी लिहाज़ा ज़ाहिर है कि किताब का हज्म मुख्तसर होगा यानी किताब की लंबाई, चौड़ाई और मोटाई मुख्तसर होगी जबकि जन्नतियों और जहन्नमियों के नामों की तादाद बहोत ज़्यादा है जो एक मुख्तसर सी किताब में अक़्लन नही आ सकते और हुज़ूर ﷺ का फरमान भी गलत नहीं हो सकता.....!

हज़रत अल्लामा सय्यिद अब्दुल अज़ीज़ दब्बाग़ रहीमुल्लाहु त'आला (मुतवफ्फा 1131 हिजरी) इस हदीस की तशरीह करते हुये फरमाते हैं कि इस हदीस में किताबत से मुराद तहरीरी शक्ल नहीं है बल्कि इसका मतलब ये है कि जब आप ﷺ ने किताब के अवराक़ की तरफ तवज्जोह फरमाई तो अहले जन्नत व जहन्नम के तमाम नाम आप ﷺ को दिखाई दिये।

इसकी मज़ीद वज़ाहत यूँ की जा सकती है कि जिस वक्त हुज़ूर ﷺ किसी भी चीज़ पर नज़रे मुबारक डालते हैं तो आपके सामने से तमाम हिजाबात उठा लिये जाते हैं। अल्लाह त'आला ने आपको कामिल तरीन रुहानी बसीरत अता फरमाई है और जब ये रुहानी बसीरत आपकी ज़ाहिरी बसारत के साथ मिल जाये तो आपकी ज़ाहिरी आंखो के सामने से भी तमाम हिजाबात हट जाते हैं। इसलिये आप ﷺ किसी भी महबूब चीज़ को उसी शय में देख लेते हैं जो उस वक़्त आपके सामने मौजूद हो। बिलफर्ज़ अगर आपके सामने कोई दीवार मौजूद हो तो आप दीवार में (भी) उस छुपी चीज़ का मुशाहिदा फरमायेंगे और अगर उस वक़्त आप का दस्त -ए- अक़दस आप के सामने होगा तो वही चीज़ आप को अपने हाथ मे नज़र आयेगी और अगर आप के सामने कोई कागज़ मौजूद हो तो वो छुपी चीज़ आप को कागज़ में नज़र आएंगी।

(ملتقطاً:الابریز،سید عبدالعزیز دباغ رحمہ اللہ تعالی، ص97،98)

मज़कूरा तशरीह को सामने रख कर ये कहा जा सकता है के अगर वो किताबे किसी आम इंसान को दे दी जायें तो वो उसमे अहले जन्नत व जहन्नम के नामों को नही देख पायेगा।

किताब तो है पर देखने वाली आंख भी चाहिये।

और कोई ग़ैब क्या तुम से निहा हो भला
जब न खुदा ही छुपा तुम पे करोड़ो दुरूद

अब्दे मुस्तफ़ा

मुझे मालूम नहीं

इमाम शयबी रहीमहुल्लाहु त'आला के बारे में अम्र बिन अबी ज़ाइदह कहते हैं कि किसी सवाल के जवाब में इमाम शयबी से ज़्यादा मैने किसी को भी कसरत से यह कहते हुये नहीं सुना कि मुझे मालूम नहीं। यानी इमाम शयबी अक्सर सवालों के जवाब में ये कहते थे कि "मुझे मालूम नहीं"।

(دارمی بہ حوالہ انباءالحی، مترجم، ص269)

ये कहना कितना मुश्किल है कि मुझे नहीं मालूम या मै नहीं जानता! अगर दो चार लोगों के बीच किसी आलिम को ये कहना पड़ जाये तो क्या होगा? माना कि ये कहने में झिझक महसूस होगी लेकिन भलाई इसी में है कि गलत बयानी का सहारा लेने के बजाए कह दिया जाये कि "मुझे मालूम नहीं"।

अब्दे मुस्तफ़ा

रिमिक्स नात - इश्क़ या तौहीन

ये बयान करते हुए भी तकलीफ़ होती है के कुछ लोगो ने नात - ए- रसूल ﷺ जैसी मुक़द्दस शै को भी खेल कूद और नाचने गाने का ज़रिया बना लिया है!
एक ऐसी बला हमारे मुआ'शरे में उतरी है जिस की जितनी मज़म्मत की जाए कम है।
हम बात कर रहे है "रिमिक्स नात" की, इस मे होता ये है के असल नात को कुछ सॉफ्टवेअर्स के ज़रिए रीमिक्स किया जाता है यानी इस मे जदीद मज़ामीर (म्यूजिकल इंस्ट्रूमेंट) की आवाज़ को मिलाया जाता है जिस तरह फिल्मी गानों में मज़ामीर की आवाज़े होती है।
ये आवाज़े (साउंड) कई तरह की होती है जिन्हें निकालने के लिए किसी ढोल को बजाने या बाँसुरी में फूँकने की ज़रूरत नही होती बल्कि ये सॉफ्टवेयर्स के ज़रिए बनाई जाती है।
धमक की आवाज़ जिसे "बीट" कहा जाता है उस के साथ कई तरह की आवाज़े मिला कर नात को ऐसी शक़्ल दी जाती है के सुनने से फिल्मी गाना मालूम होता है।
वो मुक़द्दस अश'आर जिन में अल्लाह के प्यारे रसूल ﷺ की तारीफ -ओ- तौसीफ बयान की जाती है उन को गाने की तरह रीमिक्स बनाना और फिर उसे बुलंद आवाज़ से जुलूस व महाफ़िल में बजाना इश्क़ -ए- रसूल है या तौहीन?
एक आम इंसान भी गौर करे तो उसे मालूम हो जायेगा के ये कितनी घटिया हरकत है, इस बला में एक अच्छी खासी तादाद मुब्तला है!
पहेले से ही फिल्मी गानों का भूत बचपन से पचपन के सरो पर सवार है, ये क्या कम था जो नात -ए- रसूल ﷺ की इज़्ज़त को पामाल करने पर उतर आए!

हम आप से गुजारिश करते है के लिल्लाह इस से तौबा करे और रीमिक्स नात का बॉयकॉट करे।

अब्दे मुस्तफ़ा

आपने सच फरमाया मेरे आक़ा

हज़रते सैय्यिदुना अबु हुरैरा रदिअल्लाहु त'आला अन्हु बयान करते हैं कि नबी -ए- करीम ﷺ ने इरशाद फरमाया :
उस ज़ात की क़सम जिस के क़ब्ज़ा -ए- क़ुदरत में मुहम्मद की जान है! तुम लोगों पर ज़रूर एक दिन ऐसा आयेगा कि तुम मुझे नहीं देख सकोगे और मेरी ज़ियारत करना तुम लोगों के नज़दीक अहल (घर वालों) और माल से ज़्यादा महबूब होगा।

(صحیح مسلم، باب فضل النظر الیہ ﷺ وتمنیہ، ح6008)

अल्लामा खिताबी लिखते हैं कि (हुज़ूर के विसाल के बाद) बाज़ सहाबा ने (तो यहाँ तक) कहा कि रसूलुल्लाह ﷺ की तदफीन -ए- मुबारक के बाद हम खुद अपने आपको अजनबी लगते थे।

(شرح صحیح مسلم للسعیدی، جلد سادس، کتاب الفضائل، ص828، ملتقطاً)

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

टिक टोक

शायद ही कोई ऐसा शख्स होगा जो अपने स्मार्ट फोन से सोशल मीडिया का इस्तिमाल करता हो और "टिक टोक" से बे खबर हो।
अगर आप नहीं जानते तो हम बता दें कि ये एक सॉफ़्टवेयर है, जिसमें आप छोटी वीडियो (शॉर्ट क्लिप) बना सकते हैं और आम (शेयर) कर सकते हैं।
इसमें मुख्तलिफ़ ढंग से वीडियो बनायी जाती हैं मसलन कोई नाच रहा है, कोई गा रहा है, कोई उछल कूद कर रहा है, तो कोई करतब दिखा रहा है।
इस ऐप्लिकेशन ने हर शख्स को ये मौक़ा दिया है कि बिना फिल्मों में काम किये आप अपने करतब, अपने हुनर और अपनी कला (आर्ट) को दुनिया के सामने पेश कर सकते हैं। छोटे हों या बड़े, लड़के हों या लड़कियाँ सब मदारी बने हुये हैं।

इसमें बे-हयाई, बे अदबी और बे शर्मी की हदें पार की जा रही हैं, ये सिर्फ एक ऐप्लिकेशन नहीं बल्कि ऐसा आला (टूल) है जो लोगों के अन्दर शर्मो हया नाम की चीज़ को खत्म कर रहा है।

हो गयी महफिल तेरी क्या बे अदब बे क़ाइदा
जो खड़े रहते थे वो अब हैं बराबर बैठे

इस टिक टोक ने सिर्फ दो से तीन सालों में पाँच करोड़ से ज़्यादा लोगों को अपने जाल में फँसा लिया है!

उन करोड़ों लोगों में ना जाने कितने मुस्लिम नौजवान और लड़कियाँ शामिल हैं जो दिन रात अपनी नुमाईश के नशे में चूर हैं।

वो नौजवान जिन्हें अपने दीन के लिये खून पसीना एक करना चाहिये था वो अपना ढेर सारा वक़्त इस बेहूदा चीज़ में बरबाद कर रहे हैं, वो लड़कियाँ जिन्हें अपनी आखिरत की फिक्र में डूबे रहना चाहिये था वो दुनिया को अपने पीछे खड़ा करने की धुन में हैं।

आपके पास अक़्ल है, सोचने समझने की सलाहियत है और वक़्त भी है लिहाज़ा गौर करें और पहचाने कि आपका फायदा कहाँ है।

इस ऐप्लिकेशन की नुहूसत से बचें और अपना वक़्त अच्छे कामों में लगायें, क्योंकि ये वक़्त दुबारा नहीं मिलने वाला।

हज़रते सैफ यमानी अलैहिर्रहमा फरमाते हैं कि अल्लाह त'आला का किसी बन्दे से अपनी नज़रे रहमत को हटा लेना ये है कि बन्दा बेकार बातों में मशगूल हो जाये और जो अपने मक़्सद -ए- हयात को फरामोश करके अपनी उम्र का एक लम्हा भी गुज़रे तो उसे ज़रूर हसरतों और नदामतों का सामना करना पड़ेगा।

(وقت ہزار نعمت، ص114)

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

सवालात -ए- क़ब्र सुरयानी जुबान में होंगे

इमाम -ए- अहले सुन्नत, आला हज़रत रहीमहुल्लाह त'आला से अर्ज़ किया गया कि मरने के वक़्त से जुबान अरबी हो जाती है? आपने फरमाया कि इस बारे में तो कुछ

हदीस में इरशाद नहीं हुआ, हज़रत सैय्यिदी अब्दुल अज़ीज़ दब्बा'ग रदिअल्लाहु त'आला अन्हु फरमाते हैं कि क़ब्र में सुरयानी ज़ुबान में सवाल होगा और कुछ लफ्ज़ भी बताए हैं।

(ملفوظات اعلی حضرت،ج4،ص447)

शैख़ अहमद बिन मुबारक (मुतवफ्फा 1155 हिजरी) कहते है कि मैंने (अपने शैख़, हज़रत अल्लामा सैय्यद अब्दुल अज़ीज़ दब्बा'ग रदीअल्लाहु त'आला अन्हु से) दरयाफ्त किया कि क़ब्र में सवालात सुरयानी ज़बान में होंगे? क्योंकि इमाम जलालुद्दीन सुयूती अलैहिर्रहमा की एक नज़्म में ये शेर मौजूद है:

ومن غریب ماتری العینان

ان سوال القبر بالسریانی

"इन्सान के लिए हैरानगी की बात ये है कि क़ब्र में सुरयानी ज़ुबान में मैय्यत से सवालो जवाब होंगे। "

इस नज़्म के शारेह बयान करते है कि इमाम सुयूती ने अपनी तसनीफ "शरहुस्सुदुर" में शैखुल इस्लाम अल्लामा इल्मुद्दीन के फतावा के हवाले से ये बात नक़्ल की है कि क़ब्र में सुरयानी ज़ुबान में मैय्यत से सवाल जवाब होगा।

इमाम सुयूती फरमाते हैं कि ताहम मुझे किसी हदीस में ये बात नही मिल सकी। अल्लामा इब्ने हजर अस्क़लानी से यही सवाल किया गया तो उन्होंने जवाब दिया कि हदीस के अल्फ़ाज़ से ये ज़ाहिर होता है कि शायद क़ब्र में सवाल अरबी ज़ुबान में होंगा ताहम ये मुमकिन है कि हर शख्स से उसकी मख़सूस ज़ुबान में सवाल जवाब किया जायेगा और ये बात ज़्यादा माकूल महसूस होती है।

शैख़ अब्दुल अज़ीज़ दब्बा'ग रहीमहुल्लाह त'आला अलैह (मुतवफ्फा 1131 हिजरी) ने जवाब में फरमाया कि क़ब्र में सवाल जवाब सुरयानी ज़ुबान में होंगा क्योंकि फरिश्ते और अरवाह यही ज़ुबान बोलते हैं।

सवाल फ़रिश्ते करेंगे और जवाब रूह देगी क्योंकि जब रूह जिस्म से निकल जाए तो अपनी असल की तरफ लौट जाती है।

अल्लाह त'आला जब किसी वली को "फतह -ए- कबीर" (का मर्तबा) अता फ़रमाता है तो वो बाक़ायदा सीखे बगैर ही सुरयानी ज़ुबान में गुफ़्तगू करने की सलाहियत हासिल कर लेता है क्योंकि उस वक़्त उस पर रूह का हुक्म ग़ालिब हो जाता है, इसलिए (रूह के गलबे के बाइस ही) मुर्दे को सुरयानी ज़ुबान में गुफ़्तगू करते हुए कोई उलझन दरपेश नही होगी।
शैख़ सैय्यद अब्दुल अज़ीज़ दब्बा'ग रहीमहुल्लाह त'आला अलैह सुरयानी ज़ुबान के मुताल्लिक़ तफसीली कलाम करते हुए फरमाते है कि अरवाह (रूहों) की ज़ुबान सुरयानी है।
ये ज़ुबान लफ़्जी ऐतबार से बहुत मुख्तसर और मानवी ऐतबार से इन्तिहाई वसी ज़ुबान है। दूसरी कोई ज़ुबान इस खूबी में इस के हम पल्ला नहीं हो सकती!
शैख़ अहमद बिन मुबारक कहते हैं कि मैने दरियाफ्त किया कि "क्या अरबी ज़ुबान भी?"
आप अलैहिर्रहमा ने फरमाया कि अरबी ज़ुबान भी इस के हम पल्ला नहीं हो सकती अलबत्ता क़ुरआन में मौजूद अल्फ़ाज़ का हुक्म मुख्तलिफ है।
अगर अरबी ज़ुबान में सुरयानी के मुआनी को इकट्ठा कर लिया जाए और अल्फ़ाज़ अरबी ज़ुबान के हो तो ये सुरयानी से भी शीरी और खूबसूरत ज़ुबान होंगी"
सुरयानी के सिवा दुनिया की तमाम ज़ुबानों में इतनाब (फैलाव) पाया जाता है।
सुरयानी ज़ुबान के इलावा हर ज़ुबान में अल्फ़ाज़ की तरकीब के ज़रिये जुमला बनता है लेकिन सुरयानी में हुरूफ़ के ज़रिए जुमला बनता है, यही वजह है कि सुरयानी ज़ुबान के हुरूफ़ -ए- तहज्जी का मख़सूस माना है, जब एक हर्फ़ को दूसरे हर्फ़ से मिला दिया जाए तो जुमला मुकम्मल हो जाता है।
जिस शख्स को सुरयानी के हुरूफ़ का इल्म हो जाये वो आसानी के साथ सुरयानी ज़ुबान बोल या समझ सकता है और आगे चल कर वो हुरूफ़ के असरार व मारिफ़त हासिल कर सकता है।
ये एक ज़बरदस्त इल्म है। अल्लाह त'आला ने लोगो पर रहमत करते हुए उन्हें इस इल्म से महजूब रखा है क्योंकि अगर वो इस से आगाह हो जाये तो उनकी ज़ात में मौजूद

ज़ुलमत उनकी तबाही का बाइस बन जाये (क्योंकि वो इस इल्म को मनफ़ी तौर पर इस्तेमाल करेंगे) हम अल्लाह त'आला से सलामती के तलबगार हैं।
जिस तरह ऊद की लकड़ी में रस (यानी पानी) मौजूद होता है इसी तरह सुरयानी ज़ुबान दुनिया की हर ज़ुबान में मौजूद है क्योंकि दुनिया की हर ज़ुबान हुरूफ़ -ए- तहज्जी पर मुश्तमिल होती है और उन हुरूफ़ -ए- तहज्जी की वज़ाहत सुरयानी ज़ुबान में की गयी है कि कौन सा हर्फ़ किस मख़सूस मफ़हूम की अदायगी के लिए मख़सूस है। जैसे अ़रबी ज़ुबान में लफ्ज़े "अहमद" है सुरयानी ज़ुबान के ऐतबार से इस लफ्ज़ के पहले हर्फ़ "अलीफ" का अपना एक मख़सूस माना है, इसी तरह जब आप "ह" को साकिन पढ़ेंगे तो उस का अपना मख़सूस माना होगा, फिर "मीम" पर ज़बर और "दाल" पर पेश पढ़ेंगे तो अलग अलग मफ़हूम पर दलालत करेंगे।
इसी तरह लफ्ज़े "मुहम्मद" है, ये किसी शख्सियत का नाम हो सकता है लेकिन सुरयानी ज़ुबान में इस हर हर्फ़ एक मख़सूस मफ़हूम पर दलालत करेगा।
मुख्तसर ये कि दुनिया की तमाम ज़ुबानें सुरयानी ज़ुबान से निकली है और सुरयानी दीगर तमाम ज़ुबानों की असल है दीगर ज़ुबानों के वजूद में आने की वजह ये है कि लोगों में जहालत आम हो गयी जब कि सुरयानी में गुफ़्तगू करने के लिये मारिफ़त पहली शर्त है, ताकि सुनने वाले को हर हर्फ़ के ज़रिए इस के मख़सूस मफ़हूम का पता चल जाये लिहाज़ा सुरयानी ज़ुबान ईजाद करने वालो ने इस बात का एहतिमाम किया कि मुख्तसर तौर पर ऐसी ज़ुबान ईजाद की जाए जिस के हुरूफ़ -ए- तहज्जी वसी माना पर दलालत कर सके क्योंकि मुखातिब को फायदा उस वक़्त हासिल होंगा जब उसका ज़हन आप के मतलुबा माना की तरफ मुन्तक़िल होगा, क्योंकि बेशतर उमूर माना से मुताल्लिक़ होते हैं, यहाँ तक कि बिल्फ़र्ज़ अगर ये मुमकिन होता कि आप अल्फ़ाज़ व हुरूफ़ का सहारा लिए बगैर अपना माना मुख़ातिब को मुंतकिल कर सकें तो कभी भी किसी ज़ुबान को ईजाद करने की ज़रूरत पेश न आती, यही वजह है कि सिर्फ अकाबिर अहले कश्फ या अरवाह या फ़रिश्ते इस ज़ुबान में गुफ़्तगू करते हैं, अगर आप उन्हें ये ज़ुबान बोलते हुये सुन लें तो ये महसूस होगा जैसे वो एक या दो

हुरूफ़ में अपना मुद्दा वाज़ेह कर देते हैं या चंद अल्फ़ाज़ में इतना कुछ बयान कर देते हैं जिसे बयान करने के लिए दूसरी ज़ुबान में कई रजिस्टर दरकार होंगे।

अब आप को अंदाज़ा हो जायेगा कि जब इन्सानों में जहालत आम हो गयी तो इन हुरूफ़ को दीगर मानों की तरफ मुंतक़िल कर दिया गया और इन हुरूफ़ की हैसियत मुहमल अल्फ़ाज़ की मानिंद हो गयी और ये दस्तूर चल निकला कि मुख्तलिफ हुरूफ़ को मिला कर, लफ्ज़ की शक्ल दे कर मफ़हूम की वज़ाहत की जाये और फिर उन अल्फ़ाज़ को जुमलों की शक्ल में इस्तेमाल किया जाने लगा, इस तरह एक बहुत अज़ीम इल्म मफक़ूद हो गया लेकिन इस के बावजूद आप दुनिया की किसी भी ज़ुबान का कोई भी लफ्ज़ ले लें उसका कोई एक हर्फ सुरयानी के मुहावरे से ज़रूर मुताबिक़त रखता होंगा यानी जो लफ्ज़ किसी मख़सूस माना के लिए ईजाद किया गया है, उसी लफ्ज़ का एक हर्फ़ सुरयानी ज़ुबान में उसी माने की वज़ाहत के लिए इस्तिमाल होता होगा, जैसे अ़रबी ज़ुबान में लफ्ज़े "हायित" दीवार के माने में इस्तिमाल होता है, लेकिन सुरयानी ज़ुबान में इसका पहला हर्फ़ "हा" इसी माने में इस्तिमाल होता है। अरबी ज़ुबान में पानी के लिए लफ्ज़ "मा'अ" इस्तिमाल होता है जबकि सुरयानी ज़ुबान में इस के आखिर में आने वाला "हमज़ा" पानी के लिए ईजाद किया गया है। अ़रबी ज़ुबान में आसमान के लिए लफ्ज़ "समा" मौजूद है और सुरयानी ज़ुबान में इस के मानी के लिए सिर्फ "सीन" इस्तिमाल होता है, गर्ज़े कि अगर आप तहक़ीक़ करे तो आप को कुछ पता चल जायेगा कि हर लफ्ज़ का कोई हर्फ़ मख़सूस फ़हम की अदायगी के लिए काफी होता है और बकिया हुरूफ़ खामख्वाह इस्तेमाल किये जाते है।

हज़रते आदम अलैहिस्सलाम जब ज़मीन पर तशरीफ लाये तो अपनी ज़ौजा -ए-मुहतरमा और बच्चों के साथ सुरयानी में गुफ्तगू किया करते थे।

हज़रते इदरीस अलैहिस्सलाम के ज़माने तक इसमें कोई तब्दीली नहीं आयी लेकिन उसके बाद तब्दीली का अमल शुरू हो गया और दीगर बहुत सी ज़ुबाने वुजूद में आ गयी, उसमें सबसे पहले हिन्दी (संस्क्रत) ज़ुबान वजूद में आयी और ये सुरयानी ज़ुबान से खासी क़रीब है।

हज़रते आदम अलैहिस्सलाम सुरयानी ज़ुबान में इसलिये गुफ्तगू किया करते थे क्योंकि अहले जन्नत की ज़ुबान सुरयानी है और हज़रते आदम अलैहिस्सलाम भी जन्नत में यही ज़ुबान बोला करते थे।

(انظر:الابریز من کلام سیدی عبد العزیز)

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

पबजी

जवानों की महफ़िल में हमेशा कुछ ना कुछ चर्चे में रहता है, अभी एक मोबाइल गेम है "पबजी" जिस के पीछे घंटो बर्बाद किये जा रहे है,
इस क़दर दीवाने हैं इस गेम के, के घर मे पबजी, बाहर पबजी, दिन में पबजी, रात में पबजी!
खेलते तो हैं ही और जब दोस्तो से मुलाकात करते है तो बस इसी की बाते करते है।
जितनी मेहनत, वक़्त और दिमाग इस खेल में खर्च किया जाता है, अगर उस का आधा भी पढ़ाई में लगाया जाए तो बहुत फायदा होगा,
जितनी मुहब्बत इस खेल से है अगर उतनी मुहब्बत किताबो से की जाए तो जिंदगी सवर जाए।
कई ऐसे है के पबजी मे बन्दूक में गोली भरने का तरीका, हथियार बदलने का तरीका और फालतू के फर्ज़ी दुश्मनो को मारने का तरीका तो मालूम है लेकिन अफसोस के इस्लाम के बुनियादी अक़ाइद नही मालूम!
पबजी गेम तो आज आया है, इस से पहेले कैंडी क्रश, मारियो, कॉण्ट्रा, लूडो, कैरम बोर्ड वगैरा के मजनू पाए जाते थे और आज भी है यानी हमेशा कोई ना कोई फ़ुज़ूल काम मिल ही जाता है।
नौजवान नस्ल को इन चीज़ों में मुब्तला करने के पीछे कई लोगो का हाथ है, अब किसी लड़के के वालिद को ही देख लीजिए, वो खुद बेनमाज़ी, बेइल्म और गाफिल है तो बेटे को "जुनैद व शिब्ली" कैसे बनायेगा।

बाप माँ को लगता है के बेटा नौकरी करने लगा है और हज़ारो रुपये कमा रहा है बस तरक़्क़ी काफी हो गयी, अब शादी कर दो ताकि इस के बच्चे भी यही तरक़्क़ी का मंजन खरीदने के लिए निकल पड़े।
ये नही देखा जाता है के बेटे के मोबाइल, उस के कम्प्युटर, उस के फेसबुक प्रोफ़ाइल, उस के व्हाट्सएप्प मैसेंजर पर कौन से फूल खिल रहे है, अब हो सकता है के आप सोचे के माँ बाप तो भोले होते है, उन्हें क्या मालूम बेटा क्या कर रहा है?
हम कहेंगे के माँ बाप भोले नही बल्कि गैरज़िम्मेदार है और बच्चो की तरबियत के इस्लामी तरीके से बेखबर है।
बच्चो को स्कूल का रास्ता दिखाया, कॉलेजेस के चक्कर कटवाए हत्ता के एक आधार कार्ड के लिए लाइन में घंटो खड़े रहेना सिखाया लेकिन मदरसे में तालीम हासिल करने के नाम पर खामोशी इख़्तेयार की, उलमा की खिदमत में हाज़िर हो कर फ़ैज़ हासिल करने की बात आयी तो कान पर जू तक ना रेंगी।
लापरवाही की ही वजह है के औलाद कभी पबजी मे चिकन डिनर कर रही है तो कभी फेसबुक पर एक हज़ार फ़ॉलोवेर्स जमा करने की खुशी मना रही है,
अल्लाह त'आला हमारे नौजवानों को इन फ़ुज़ूल चीज़ों से बचाये और आने वाली नस्लो की तरबियत पर काम करने की सलाहियत अता फरमाए।

अब्दे मुस्तफ़ा

ज़ईफ रिवायात फज़ाइल में मक़बूल हैं लेकिन

जब हम किसी रिवायत के बारे में बताते हैं कि ये सख्त ज़ईफ है या मौज़ू है तो वायिज़ीन व ख़ुत्बा की तरफ से फौरन जवाब आता है कि "फज़ाइल में सब कुछ चलता है" और इसके बाद हम कुछ कहें तो हमारी सुन्नियत पर ही हमला शुरु हो जाता है।
हज़रत अल्लामा मौलाना उसैदुल हक़ क़ादरी बदायूनी लिखते हैं कि हमारे मुक़र्रिरीन ने उसूल -ए- हदीस का ये क़ाइदा कहीं से सुन लिया है कि "फज़ाइल में ज़ईफ हदीस भी मक़बूल होती है" और इस क़ाइदे के बे महल इस्तिमाल से मौज़ू और गैर मुअ़तबर

रिवायात के लिये इतना बड़ा दरवाज़ा खुल गया कि हर क़िस्म की रिवायतें इस क़ाइदे की दुहायी देकर बयान की जाने लगी।
इसमें कोई शक नहीं कि ये क़ाइदा अपनी जगह दुरुस्त है लेकिन इसके इतलाक़ का भी एक दायरा है और इसके इस्तिमाल के कुछ शराइत हैं जिनको इम्मा वा उलमा ने बयान कर दिया है, लेकिन जब ये क़ाइदा कम इल्म मुक़र्रिरीन के हत्थे चढ़ा तो नतीजा ज़ईफ फिर ज़ईफ -ए- शदीद फिर मुनकर और आखिर में मौज़ू रिवायत की क़बूलियत की सूरत में निकला।
(मज़ीद लिखते हैं कि) जो अहादीस वाक़यी क़ाबिल -ए- रद्द थीं हमने उसे भी क़ुबूल कर लिया।

(انظر: نقد و نظر، ص 11، ملخصًا)

बात बात पर इस क़ाइदे की रट्ट लगाने वाला ज़रा होश के नाखून लें और हर रिवायत को ज़बरदस्ती फज़ाइल में ढकेलने का काम ना करें।

अब्दे मुस्तफा

ये शान -ए- अली है ज़रा संभल कर

हज़रते सैय्यिदुना अली रदिअल्लाहु त'आला अन्हु फरमाते हैं के मेरे बारे में दो तरह के आदमी हलाक हो जाएंगे, एक हद से ज़्यादा मुहब्बत करने वाला जो मेरी ऐसी शान बयान करेगा जिसका मै हक़दार नही और दूसरा मुझ से बुग्ज़ रखने वाला जिसे मेरी दुश्मनी मुझ पर बोहतान लगाने पर आमादा करेगी।

(مسند احمد، مشکوٰۃ، مرقات و مرآۃ المناجیح)

राफ़ज़ी और उन के छोटे भाई तफ़ज़ीलि तो इस मर्ज़ में मुब्तला है ही लेकिन आज कल खुद को अहले सुन्नत कहने वाले कुछ अफ़राद भी इस वायरस की ज़द में है। खुद को मुहिब्बे अली व अहले बैत साबित करने के चक्कर मे अहले सुन्नत के मौकिफ़ पर ही फतवे जारी फ़रमा रहे है। तफ़ज़ीलियत से बेज़ारी और नफरत का इज़हार तो करते है लेकिन उनकी खुद की बातों से तफ़ज़ीलियत की बू आती है।

अभी मौलूद -ए- काबा के मस'अले पर ही खुद को "मोतबर उलमा -ए- अहले सुन्नत" कहलाने वाले चंद हज़रात ने ये ज़हर उगला है के जो हज़रते अली रदिअल्लाहु त'आला अन्हु की विलादत खाना -ए- काबा में होने का इनकार करे वो बुग्ज़े अली व बुग्ज़े अहले बैत में मुब्तला है और खानदान -ए- रसूल की तनक़ीस का पहलू तलाश कर रहा है
इन मुअ़तबर उलमा (जो कि अस्ल में एक मुक़र्रिर से ज़्यादा नही) को चाहिए था के शाख काटने से पहले ये देख ले कि खुद की तशरीफ़ किस शाख पर जमी हुई है लेकिन आव देखा ना ताव फायरिंग शुरू कर दी और अंजाम ये हुआ के सुरीन जमीन पर आ गिरी।
इन्हें चाहिए था कि इस तहक़ीक़ी मस'अले में टांग ना अड़ाए क्योंकि कहते हैं "जिसका काम उसी को साजे" लेकिन दिल है कि कभी कभी ज़लील करवा कर ही छोड़ता है।
अगर इन की ये बात तस्लीम कर ली जाए कि "जो हज़रते अली को मौलूद -ए- काबा न माने वो बुग्ज़.....अलख" तो फिर सैकड़ो अकाबिरीन -ए- अहले सुन्नत को दुश्मन -ए- अहले बैत क़रार देना होगा जिन में इमाम जलालुद्दीन सुयूती, इमाम नववी, इमाम शमशुद्दीन मुहम्मद, इमाम मुहम्मद बिन अली शाफ़ई, इमाम शहाबुद्दीन खिफाजी, अल्लामा हुसैन दयार बाकरी, इमाम बहाउद्दीन मक्की, अल्लामा हलबी, इमाम इब्ने असाक़ीर, अल्लामा जमालुद्दीन अफ्रीक़ी वगैरा समेत दीगर कई उलमा शामिल है!
अगर ज़्यादा दूर न जाये तो सदरुश्शरिया, हज़रत अल्लामा मुफ़्ती अमजद अली आज़मी, फ़क़ीह -ए- मिल्लत, हज़रत अल्लामा मुफ़्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी, हक़ीमुल उम्मत, मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी अलैहिमुर्रहमा पर बुग्ज़ -ए- अहले बैत का फतवा लगा कर दिखाए (जो अनजाने में आप लगा भी चुके है) ताकी आप को मुहिब्बे अहले बैत का अवार्ड दिया जा सके।

अहले सुन्नत व जमा'अत एतिदाल पसंद है लिहाज़ा अपनी शिद्दत पसंदी को इसमें शामिल करने और इस पर मुहब्बत -ए- अहले बैत का लेबल लगा कर दुसरो पर

कीचड़ उछालने की कोशिश न करे, ये हमारी गुज़ारिश है और इसी में आप की सलामती भी है वरना जब गिरफ्त होगी तो कई हाथ ज़द में आएंगे।

अब्दे मुस्तफ़ा

कोई हद नहीं

हज़रते इमाम बौसिरी रहिमहुल्लाहु त'आला लिखते है :

دع ما ادعته النصاری فی نبیھم
واحکم بما شئت مدحا واحتکم

وانسب الی ذاتہ ما شئت من شرف
وانسب الی قدرہ ما شئت من عظم

فان فضل رسول اللہ لیس لہ
حد فیعرب عنہ ناطق بفم

"जो ईसाइयो ने अपने नबी के बारे में कही उसे छोड़ कर बाकी हर तरह अपने हबीब ﷺ की शान बयान कर, आप की ज़ात की तरफ हर शर्फ़ और हर अज़मत को बिला झिझक मंसूब कर दे, आप की फ़ज़ीलत और शान की कोई हद नही फिर आप की तारीफ का हक कोई किस तरह अदा कर सकता है"

(ملخصاً: تجھ سا کوئی نہیں، ص6)

तेरे तो वस्फ एब -ए- तनाही से है बरी
हैरा हूँ मेरे शाह मैं क्या क्या कहूँ तुझे

अब्दे मुस्तफ़ा

तो फिर कौन कहेगा?

खतीब साहिब से तक़रीर के बाद सवाल किया गया कि हज़रत आपने जो रिवायत बयान की वो किस किताब में है? बड़ा तहक़ीक़ी जवाब आया कि मै ने हज़रते फुलाँ साहिब से सुनी थी........,

जब अर्ज़ किया गया कि रिवायत मौज़ू वा मनघढ़त है तो जनाब ने ऐसी बातें कह डाली कि आपको किसी किताब में नहीं मिलेंगी! फरमाने लगे कि क्या आपने तमाम किताबें पढ़ ली हैं जो इसे मौज़ू कह रहे हैं या आप हज़रते फुलाँ साहिब से ज़्यादा इल्म रखते हैं?

ये बातें कुछ मुक़र्रिरीन और आम लोगों से भी सुनने को मिलती रहती हैं कि क्या आप फुलाँ से ज़्यादा जानते हैं या आपने तमाम किताबें पढ़ ली ली हैं.......?

हम इस पर ज़्यादा लम्बी चौड़ी बहस ना करते हुये सिर्फ एक सवाल करना चाहते हैं कि अगर किसी रिवायत को मौज़ू कहने के लिये दलाईल नहीं बल्कि किसी हज़रत से ज़्यादा इल्म रखना या तमाम किताबें पढ़ना ज़रूरी है तो फिर कौन सा ऐसा शख्स है जिसने तमाम किताबें पढ़ ली हैं या वो किसी से ज़्यादा इल्म का दावा कर सकता है? अगर कोई ऐसा शख्स नहीं है तो फिर किसी भी रिवायत को मौज़ू नहीं कहा जा सकता क्योंकि हो सकता है वो किसी किताब में मौजूद हो, इससे तो झूठी रिवायात को क़बूल करने का दरवाज़ा खुल जायेगा!

ऐसी बातें करने वालों को चाहिये कि ये भी बता दें कि जब हम दलाईल के साथ नहीं कह सकते तो फिर कौन कहेगा?

अब्दे मुस्तफ़ा

क़ब्रे रसूल की तस्वीर

सोशल मीडिया पर कुछ तस्वीरें ये कह कर शेयर की जाती हैं कि ये क़ब्रे रसूल ﷺ की तस्वीर है, आज एक क़ब्र की तस्वीर तो कल दूसरी क़ब्र की.........,

ऐसा करने वाले शोहरत के भूखे हैं या अक़ीदत में अन्धे हो चुके हैं, ये तो नहीं कहा जा सकता लेकिन हम ये ज़रूर कहना चाहेंगे कि ये एक निहायत ही गैर ज़िम्मेदाराना काम है।

ये तस्वीरें सहीह कैसे हो सकती हैं जब कि हुज़ूर ﷺ की क़ब्रे मुबारक तक जाने का फिल्हाल कोई रास्ता ही नहीं है! इसकी तफसील कुछ यूँ है :

(1) रसूलुल्लाह ﷺ वा शैखैन करीमैन के मज़ारात के गिर्द चार दीवारी है।

(2) ये चार दीवारी बिल्कुल बंद है, इसमें आने जाने का कोई भी रास्ता नहीं है।

(3) इस चार दीवारी के गिर्द भी एक पाँच कोनो (5 कॉर्नर) वाली मज़बूत दीवार है जिस पर चादर डाल दी गयी है।

(4) ये पाँच कोनों वाली दीवार भी बिल्कुल बंद है, इसमें भी आने जाने का कोई रास्ता नहीं है।

(5) इस पाँच कोनों वाली दीवार के बाहर अब सुनहरी जालियाँ हैं जिन के अन्दर पर्दे लगे हैं।

(6) खास हुजरा -ए- मुबारका और पाँच कोनो वाली दीवार के बिल्कुल नीचे सुल्तान नूरुद्दीन ज़न्गी अलैहिर्रहमा की बनायी हुई, सीसा पिलाई मजबूत जमीनी दीवार मौजूद है।

(7) खास हुजरा -ए- मुबारका और पाँच कोनो वाली दीवार के ऐन ऊपर सर सब्ज़ गुम्बद मज़ारात -ए- षलाषा से बरकतें लूट रहा है और पूरे आलम में लुटा रहा है।

(8) अब कोई भी ऐसा रास्ता नहीं है कि बराहे रास्त कोई मज़ारात तक पहुंच सके और ये तमाम उमूर पहली सदी से लेकर ज़्यादा से ज़्यादा छठी सदी तक मुकम्मल कर दिये गये थे।

(9) अगर किसी बादशाह या सदर या फिर किसी मख्सूस शख्सियत के लिये दरवाजा खोला जाता है तो वो फ़क़त पाँच कोनों वाली दीवार के बाहर तक ही जाते हैं ना कि खास मज़ारात तक।

(10) जब अन्दर जाने का रास्ता था उस वक़्त ये केमरा इजाद नहीं हुआ था और जब केमरा आया तो इससे काफी पहले रास्ता बंद हो चुका था लिहाज़ा ये तस्वीरें औलिया -ए- किराम की हैं जिन्हे हुज़ूर ﷺ की तरफ मन्सूब किया जाता है।

अ़ब्दे मुस्तफ़ा

डॉ. इक़बाल

बदरुल उलमा, हज़रत अल्लामा मौलाना बदरुद्दीन अहमद सिद्दीकी अलैहिर्रहमा, डॉ. इक़बाल के बारे में लिखते है :

रज़वी दारुल इफ्ता, बरेली शरीफ मे एक इस्तेफ्ता पेश किया गया जिस में डॉ. इक़बाल के कुछ (कुफ़्रिया) अश'आर के मुताल्लिक़ सवाल किया गया था तो मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद आज़म ने (फतवे में) उन अश'आर को कुफ़्रिया करार दिया और काईल (यानी डॉ. इक़बाल) के बारे में तहरीर किया के मैने हुज़ूर मुफ़्तीये आज़म -ए- हिन्द, अल्लामा मुस्तफ़ा रज़ा खान अलैहिर्रहमा से डॉ. इक़बाल के बारे में दरियाफ्त किया तो आप ने फरमाया :

बेशक इक़बाल से खिलाफ -ए- शरह उमूर का सुदूर हुआ है, कुफ़्रियात तक उस से सादिर हुए है मगर वो अल्लाह त'आला के महबूब, सरकार -ए- दो आलम ﷺ की शान में गुस्ताख़ व बेअदब नही था बेशक जहालत की बिना पर उस से कुफ्र तक पहुचने वाली गलतिया हुई है मगर आखिर वक़्त में मरने से पहले उस की तौबा भी मशहूर है और जो अल्लाह के महबूब की शान में गुस्ताख़ नही होता उस को तौबा की तौफ़ीक़ होती है उस के बाद हुज़ूर मुफ्तिये आज़म -ए- हिन्द ने इक़बाल का ये शेर पढ़ा :

بمصطفی برساں خویش را کہ دیں ہمہ اوست
گر باو نرسیدی تمام بولہبی است

ये शेर पढ़ कर हज़रत की आंखों में आंसू भर गए और फरमाने लगे के इस शेर से हुज़ूर ﷺ के साथ इक़बाल की सच्ची मुहब्बत ज़ाहिर है, उस के बाद फरमाया के इक़बाल के बारे में तवक़्क़ूफ़ चाहिए और हज़रत का ये फरमान नासाज़ीये तबा से 15-16 साल पहेले का है और हज़रत के इस फरमान पर हमारा अमल है।

(فتاوی بدر العلماء، ص126،229، ملخصًا)

खलीफा -ए- हुज़ूर मुफ्तिये आज़म -ए- हिन्द हज़रत अल्लामा मुफ़्ती शरीफुल हक़ अमजदी अलैहिर्रहमा, डॉ. इक़बाल के एक शेर की तावील करते हुए लिखते है के हमे हुक्म है के मोमिन के कलाम को अच्छे मानो पर महमूल करना वाजिब है।

(فتاوی شارح بخاری، ج2، ص486، ملتقطاً)

आप रहिमहुल्लाहू त'आला एक और मक़ाम पर लिखते है के इक़बाल की तौबा मशहूर है, बहुत से मुस्तनद आलिमो ने उस की (तौबा की) रिवायत भी की है इस लिए इस बारे में सुकूत किया जाता है।

(فتاوی شارح بخاری، ج3، ص491، ملتقطاً)

अब्दे मुस्तफ़ा

ये कोई नई बात नहीं

जब हम झूठे मुक़र्रिरीन और ऐसे नाम निहाद उलमा का रद्द करते हैं जिन्होंने अपने अफ'आल से दीन को नुक़सान पहुंचाया है और उलमा की जमा'अ़त को बदनाम किया है तो कुछ लोग जिनको शायद अपनी दुकान की फिक्र है, हमसे कहते हैं कि ये उलमा की तौहीन है और तुम उलमा -ए- किराम के गुस्ताख हो........!

ये कोई नई बात नहीं है बल्कि उलमा -ए- मुतक़द्दिमीन के साथ भी ऐसा हुआ है कि उन्हें इन दो नम्बरों का रद्द करने की वजह से बुरा भला कहा गया और तकलीफें दी गयीं चुनान्चे :

मशहूर ताबई, इमाम शयबी अलैहिर्रहमा ने जब एक मुक़र्रिर से भरे मजमे में फरमाया कि "अल्लाह से डर और झूठी रिवायत बयान मत कर" तो उस मुक़र्रिर ने इमाम शयबी से कहा कि ए बद किरदार तू मेरा रद्द करता है और फिर जूता उठाकर इमाम शयबी को मारने लगा फिर पूरा मजमा इमाम शयबी पर टूट पड़ा!

(- تحذیر الخواص من اکاذیب القصاص، امام جلال الدین سیوطی، ص203،204

- والقصاص والمذکرین، علامہ ابن جوزی، ص302،303

- والاسرار المرفوعۃ فی الاخبار الموضوعۃ المعروف بالموضوعات الکبری، ملا علی قاری، ص85،86

وموضوعات کبیر، مترجم، ملا علی قاری، ص64،65)

अगर आज ऐसों का रद्द करने का हमें बुरा भला कहा जाता है तो ये कोई नई बात नहीं है।

अब्दे मुस्तफ़ा

कोई वक़्त भी होता है

अल्लामा इब्ने जौज़ी लिखते हैं कि बसरा में एक शख्स क़रीबुल मर्ग (मौत के क़रीब) था।
एक शख्स आया और मरने वाले से कहने लगा :
ए फुलाँ! इस तरह कहो "ला इलाहा इल्लल्लाहु" और अगर चाहो तो यूँ कहो "ला इलाहा इल्लल्लाहा" (यानी लफ्ज़े अल्लाह को ज़बर के साथ पढ़ो) अलबत्ता पहली सूरत (यानी लफ्ज़े अल्लाह को पेश के साथ) पढ़ना इमाम सैबुविया के नज़दीक ज़्यादा अच्छा है। ये सुनकर अबुल ईना ने कहा कि ये कन्जरी की औलाद नज़ा की हालत में, मरने वाले पर नहवियों के क़ौल पेश कर रहा है।

(ملخصًا:اخبار الحمقی والمغفلین، مترجم، ص192،193)

हर काम के लिये एक सहीह वक़्त होता है और मुनासिब जगह भी।
अगर आपके पास इल्म है तो उसे ऐसी जगह बयान करें जहाँ उसकी ज़रूरत हो, अगर आप भी मज़कूरा शख्स की तरह मरने वाले के सामने अरबी ग्रामर के क़वाइद बयान करेंगे या ना अहल लोगों के सामने इल्म झाड़ेंगे तो आपको "अहले इल्म" में नहीं बल्कि "कन्जरी की औलाद" में शुमार किया जायेगा।

अब्दे मुस्तफ़ा